समकालीन कविता : स्वरूप और दृष्टि

रामजीत [illegible]

स्वाधीनता प्राप्ति के साथ देश में जीवन के हर क्षेत्र में नयी आकांक्षाओं ने जन्म लिया। किन्तु आर्थिक सांस्कृतिक स्वाधीनता के अभाव में देश की इच्छाओं को सही दिशा न मिल सकी। मूल्यविहीन राजनीति, मूल्यों के विघटन के कारण धीरे-धीरे जनता के [illegible] के बादल मँडराने लगे। परिणाम स्वरूप आस्थावादी जीवन दृष्टि के स्थान पर अनास्थावादी मूल्य, जीवन और सर्जन में जगह पाने लगे। हिन्दी कविता के क्षेत्र में प्रयोगवाद के बाद आयी नयी कविता का संपूर्ण आन्दोलन मोह भंग, अवसाद, खिन्नता, श्रम के [illegible] आत्म-निर्वासन, अकेलापन, उब, विसंगति, विडम्बना, विद्रूपता, अंधेरा, संत्रास, घुटन, अस्तित्व के संकट आदि का भावबोध लेकर आया। 1960 के बाद नई लगने वाली राहें [illegible] का रूप लेती हुई अपना वर्चस्व खोने लगी। उधर राजनीति में एक अलग परिवेश [illegible] हुआ। परिणामस्वरूप कविता को नयी कविता से अलग पहचान बनानी पड़ी। इस [illegible] कविता को नाम दिया गया-'समकालीन कविता'।

समकालीन कविता के केन्द्र में मामूली आदमी की पीड़ा और शक्ति, स्थितियों और मनःस्थितियों की टकराहट, परिवेश की पुकार तथा स्थापित व्यवस्था को [illegible] और बगाावत के तत्व प्रमुख हो गये। समकालीन कविता में संवेदना, काव्य भाषा, [illegible] मिथक, बिंब आदि के स्तरों पर बुनियादी परिवर्तन घटित हुआ।

समकालीन कविता को नयी कविता के बाद की 'विद्रोही कविता' भी कहा जाता है। समय के प्रति सजग आलोचक समकालीन कविता को 'साठोत्तरी कविता' कहना अधिक संगत मानते हैं। तो कुछ ऐसे भी आलोचक है जो कथ्य और संवेदना की दृष्टि से समकालीन कविता को 'संपूर्ण यथार्थ' की कविता कहते हैं। समकालीन कविता न तो भावना मात्र है न कल्पना का अतार्किक आधार। मूलतः यह कविता विचारों के गहरे तनावों-दबावों से [illegible] हो कर रची जाती है। जीवन से उपजी स्थितियों का तनाव समकालीन कविता में इतना अधिक बढ़ गया है कि कवि स्वये से लड़ कर लहू-लुहान दिखाई देता है। उसकी कविता [illegible]

[illegible] परिवेश से मुठभेड़ करती कविता है। व्यापक अर्थों में परिवेश ही इस काव्य सर्जना की मूल प्रेरणा है। यहाँ महामानव और लघु मानव की बहस को समाप्त करता हुआ सामान्य आदमी केन्द्र में आ गया है। नयी कविता का युग नेहरू युग की राजनीति का दस्तावेज है तो समकालीन कविता में चीन-पाकिस्तान युद्ध की ध्वनि और गुर्राहट तथा लालबहादुर शास्त्री, इन्दिरा गांधी और उनके बाद के युग की चेतना का यथार्थ विस्फोट है। समकालीन कविता अपने युग के यथार्थ की टकराहट से राह बनाती नजर आती है। समकालीन कविता अपने युग के परिवेशगत यथार्थ की ईमानदारी अभिव्यक्ति है। इस युग के मनुष्य के भीतर पैठे संघर्ष के, तनाव, आत्म-मंथन, उत्पीड़न, शोषण से उत्पन्न दर्प, व्यंग्य विद्रूप, टूटते हुए मूल्यों और टूटते सपनों की चीख इस कविता की संवेदना के रेशे रेशे में बिंधी हुई है। एक प्रकार से आज के मामूली आदमी का हाड़ फोड़ कर निकला हुआ दर्द ही रचनात्मकता में ढल कर समकालीन कविता के स्वरूप को निर्मित करता है। समकालीन कविता में पश्चिम के पाश्चात्य के दर्शनवाला अस्तित्ववादी काव्य-मुहावरा सक्रिय नहीं है। बल्कि यह कविता निराशा, अनास्था, गलते मूल्यों की कविता अवश्य है पर यह मूल्यों के स्तर पर अनास्थावाद के महत्व प्रतिष्ठा नहीं करती। अपनी दिशा और दृष्टि में यह नयी पीढ़ी के अनास्थावादी मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध कविता है।

समकालीन कविता मात्र सांप्रतिक कविता (आज की कविता) का पर्याय नहीं है। समकालीनता का अर्थ है सन् 1960 के बाद की कविता। इस संदर्भ में समकालीन शब्द को 'समसामयिक' के पर्याय रूप में ग्रहण नहीं किया गया क्योंकि अगर इसका अर्थ लिया जाए तो प्रत्येक कविता अपने समय में समसामयिक होगी। इसी तरह इस शब्द से 'तात्कालिकता' का अर्थ भी नहीं लिया जाता है। मूलतः यह काल (समय) को अपने से पहले की कविता की तुलना में ज्यादा सतर्कता, प्रखरता और चौकन्नेपन के साथ ग्रहण करती है। इसी सतर्कता के कारण समकालीन कविता अपने समय के प्रमुख अंतर्विरोधों, विरोधाभासों, द्वन्द्वों और विसंगतियों की कविता है। कवि को मालूम है कि कष्ट और शोषण का वास्तविक रूप क्या है और (उसका कारण क्या है ?) वह उन्हें जीवनानुभवों से पहचान कर लिखता है। फलतः समकालीन कविता 'जो हो रहा है' उसका सीधा खुलासा है। इसलिए इसे वर्तमान से सीधे साक्षात्कार की कविता भी कहा जाता है क्योंकि नेहरू युग के बाद की लड़ते-झगड़ते, दुखते-[illegible], तड़पते-बौखलाते, सोचते-झींकते आदमी का परिदृश्य है। वह 'कल्पित' और अद्वितीय के लिए संघर्ष न कर साधारण जन के लिए संघर्ष करता है। सामाजिक-राजनीतिक स्तरों पर यह कवि ठोस यथार्थ के अनुभव की कविता लिखता है। इस परिदृश्य को समकालीन कविता के प्रमुख कवि धूमिल मुकम्मल रूप में प्रस्तुत करते हैं। 'संसद से सड़क तक' नामक [illegible] संकलन की प्रसिद्ध कविता 'मोचीराम' की पंक्तियों के द्वारा -

मेरे लिए हर आदमी एक जोड़ी जूता है।
जो मरम्मत के लिए खड़ा है।